वन उत्पादकता संस्थान, रांची

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)

(पर्यावरण,वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय,भारत सरकार की एक स्वायत निकाय)

रांची - गुमला राष्ट्रीय राजमार्ग - 23, रांची (झारखण्ड) – 835303

आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत

वनोत्पाद आधारित लघु उद्योग

विषय पर संगोष्ठी

दिनांक: 12.01.2022

स्थल :कुटाम, तोरपा, खूंटी

वन पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के आदेश एवं भारतीय वानिकी अनुसंधान एव शिक्षा परिषद देहरादून के निर्देश पर वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत दिनांक 12.01.2022 को कोविड-19 के दिशा निर्देशों का पालन करते हुए "वनोत्पाद आधारित लघु उद्योग" विषय पर एक संगोष्ठी आयोजन किया गया जिसमें लगभग 31 किसानों ने भाग लिया।

संस्थान के श्री बी.डी. पंडित ने कार्यक्रम की रुपरेखा प्रस्तुत की एवं संस्थान के शोधकार्यों तथा अन्य गतिविधियों से अवगत कराया। श्री पंडित ने बनों में पाये जाने वाले वनोत्पाद एव उस के अनुरुप लघु उद्योग की चर्चा करते हुए श्री वैद्य को वनोत्पाद आधारित लघु उद्योग के विषय में व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया।

श्री एस.एन.वैद्य ने बताया कि वनोत्पाद के काफी लाभ हैं तथा उनके उत्पाद से लघु उद्योग स्थापित किया जा सकता है। सामन्य तौर पर पहले वनोत्पाद (विभिन्न औषधीय उत्पाद,ग़ोंद,फल पत्तियां आदि) की पहचान करना तथा उसके उपयोग के बारे में जानकारी होना आवश्यक है।

संस्थान के वैज्ञानिक श्री सुभाष चंद्र ने विभिन्न वनोत्पाद की चर्चा करते हुए बताया कि जंगलो मे बहुत सारे उत्पाद हैं जिसका उपयोग कर जीवन स्तर को उपर उठाया जा सकता है। श्री आलम ने

बांस से बनोत्पाद का जिक्र किया एवं बताया 100 रुपये की बांस से 1000 रुपये तक कमाया जा सकता है।

श्री बी.डी.पंडित ने विभिन्न बनोत्पाद की चर्चा करते हुए नमुने के तौर पर इमली से इमली आचार, पाउडर, जेली, चटनी आदि बनाकर आय मे बढोतरी किया जा सकता है।

“औषधीय पौधों की खेती एवं मूल्यवर्धन” विषय पर खूंटी जिले में कर्रा प्रखण्ड अंतर्गत वनटोली ग्राम में किसानों जन प्रतिनिधियो को प्रशिक्षण दिया गया, जिसमे लगभग ७० प्रतिभागियों ने भाग लिया।

वनटोली के वार्ड सदस्य श्री मती मंगरा देवी की अध्यक्षता में दीप प्रज्वलित के साथ श्री करम सिह मुण्डा के द्वारा स्वागत के पश्चात श्री पंडित ने विभिन्न औषधीय पौधों की खेती की आवश्यकता एवं ग्राम स्वावलंवन में इसके महत्व से परिचित कराया। उन्होने आंवला, हर्रा, बहेरा को एकत्र कर त्रिफला बनाकर और उसके उपर प्रदर्शन ग्राम कुटाम का लेबल लगाकर एक लघु उद्योग स्थापित करने की सलाह दी। एलोवेरा का जूस निर्माण कर उद्योग लगाकर रोजगार सृजन के टिप्स बताये। उन्होने बताया कि वनोत्पाद संग्रहण रोजगार में 40% महिलांए कार्यरत हैं, जरुरत है उसे उद्योग का रुप देंने की। श्री सूरज कुमार ने भी कुछ खरीदार कम्पनियों के नामों की चर्चा की।

कार्यक्रम में प्रेरक दीदी पूणम सोय ने भी विचार व्यक्त किया। श्री रंजीत मांझी ने धन्यवाद ज्ञापन किया एवं कार्यक्रम समाप्ति की घोषणा की।

कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री सुभाष चंद्र सोनकर, श्री एस.एन.वैद्य, श्री निसार आलम, श्री बी.डी.पंडित एवं श्री सूरज कुमार ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

आयोजित संगोष्ठी की झलकियां

आयोजित संगोष्ठी की झलकियां

आयोजित संगोष्ठी की झलकियां